प्रथम अध्याय

गिरिराज किशोर का जीवन परिचय एवं रचना संसार

प्रथम अध्याय

"गिरिराज किशोर का जीवन परिचय एवं रचना संसार"

प्रस्तावना :

नाटककार गिरिराज किशोर जी ने स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक साहित्य के विकास में अपने योगदान द्वारा अलग पहचान बनाई है। उनके सृजनात्मक साहित्य में उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी, आलोचनात्मक साहित्य, बाल साहित्य आदि कृतिया उपलब्ध हैं।

गिरिराज किशोर ने समाज की पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, राजर्नीतिक और आर्थिक स्थितियों का बखुबी से चित्रण किया है। आपके नाटकों में युवा पीढ़ी विद्रोही चित्रित हुई है। गिरिराज किशोर ने समाज में स्थित समस्याओं का यथार्थ चित्रण किया है। इस संदर्भ में प्रल्हाद अग्रवाल लिखते है - "गिरिराज सातवे दशक के उन विशिष्ट सर्जकों में से हैं, जिनमें पुराणों से टूटकर चलने का अग्रह नहीं है। उनमें शिल्प परिवर्तन संबंधी कोई विशिष्ट प्रयत्न भी स्पष्ट रूप से नहीं हैं। किंतु एक ऐसा बिंदु आवश्य मिल जाता है जो उन्हें अपने समकालीनों से भी स्पष्टता अलगाव देता है। अलगाव का यह बिंदू उनकी सूक्ष्म दृष्टि है। जो उनकी निरीक्षण क्षमता का परिचायक है। तथा अभिव्यक्ति के माध्यम की देन है।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर जी एक ऐसी हस्ती है जिन्होंने समाज की हर पीड़ा, यातना, दर्द को अपने साहित्य में स्पष्ट किया है।

1.1 जीवन परिचय :

1.1.1 जन्म :

गिरिराज किशोर जी का जन्म "8 जुलाई, 1937 ई को उत्तर प्रदेश के मुज्जफरनगर के एक जमींदार परिवार में हुआ।"[2]

1. प्रल्हाद अग्रवाल	- हिंदी कहानी सातवाँ दशक	-	पृष्ठ - 49
2. गिरिराज किशोर	- जुर्म आयद मलपृष्ठ से उधृत	-	पृष्ठ - 49

1.1.2 माता-पिता तथा बचपन :

गिरिराज किशोर का परिवार एक प्रतिष्ठित और सामान्य मध्य-वर्ग का था। उनके माता का नाम तारावती था। गिरिराज किशोर अपनी माता के बारे में लिखते हैं - "सुना है बहुत अच्छा गायन का शौक। कपड़े सीने का शौक।उस जमाने में घुड़ सवारी करती थी। साईकिल पर चढ़ती थी परंतु पुरानपंथी परिवार के होने के कारण यह सब करने की स्वतंत्रता कम ही थी।"[1] लेकिन गिरिराज किशोर जी पर तारावती जी की छत्रछात्रा अधिक दिन तक नहीं रही। जब वे डेढ़ साल के थे तभी उनके माता की मृत्यु हो गई। किशोर जी के पिता जी का नाम सुर्यप्रकाश था। वे जमींदार थे और जमींदार होने के कारण प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान था। उनकी मृत्यु 28 जून, 1988 में मुजफ्फरनगर में हो गई। गिरिराज किशोर अपने पिता जी के बारे में कहते हैं - "वे शांत स्वभाव के थे। मेहनती थे। अपने पिता को ईश्वर मानते थे। जमींदारी का काम वे ही देखते थे।"[2] गिरिराज किशोर का बचपन उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर में बीता। बारह साल तक वे मुजफ्फरनगर में रहें।गिरिराज किशोर जी की माता की मृत्यु के पश्चात उनके दादाजी ने उनकी परवरीश की थी। किशोर जी अपने दादाजी के बारे में कहते है - "माँ के मरने के बाद सबसे ज्यादा बाबा के साथ रहा। उनकी गंभीरता और चीजों की बारीकी में जाने की प्रवृत्ति मैंने काफी हद तक ली उनका गुस्सा अलबत्ता छोड़ दिया।"[3] उनके दादाजी ने किसी चीज की कमी महसूस उन्हे नहीं होने दी। किशोर जी दादाजी के बारे में लिखते हैं - "बाबा जब क्लब से लौटते थे तो पोते के लिए जरूर कुछ-न-कुछ लाते थे। सबेरे उठते ही सबसे पहले हाथ सिरहाने पहुँचता था... जब कुछ रखा हुआ मिल जाता था तो आँखे खोलता था।"[4] अत: स्पष्ट है कि गिरिराज किशोर जी के माता की मृत्यु के पश्चात् दादाजी ने उनकी परवरीश की थी।

---

1. शोध छात्र राजेंद्र पवार - गिरिराज किशोर का नाटय शिल्प (परिशिष्ट) से उधृत - पृष्ठ - 175
2. वही - पृष्ठ - 175
3. डॉ सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर - पृष्ठ - 19
4. गिरिराज किशोर - क्या यह मेरा समय था? - पृष्ठ - 11

1.1.3 परिवार :

गिरिराज किशोर जी का परिवार एक प्रतिष्ठित और सामान्य मध्य-वर्ग का परिवार था। उनको तीन भाई और दो बहने थी। किशोर जी उनके माता-पिता की छठी संतान है। उनको अपने परिवार के प्रति आदर तथा प्रेम है। किशोर जी की जमींदारी खत्म होने के बाद उनकें परिवार की आर्थिक स्थिति बिघड़ गई। किशोर जी लिखते हैं कि - "दरअसल तब तक जमींदारीयाँ खत्म हो चुकी थी। जमींने बिकने का सिलसिला शुरू हो गया था। कर्जेवाले शुरू में सलाम करने आते थे फिर दबी जबान से कहने लगे थे, 'राय साहब, बच्चों को काम करना है, कुछ मदद (यानी भुगतान) हो जाय' तब सूद वगैरह को अदायगी हो जाती थी। कोई जमीन बिकती थी तो मूल दिया जाता था।... गाड़ी-घोड़े बिक गए थे। अमीरों की खोल में गरीबी की घूसपैठ हो जा रही थी।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि गिरिराज किशोर जी को बचपन में आर्थिक समस्या का सामना करना पड़ा है।

1.1.4 शिक्षा :

गिरिराज किशोर जी की प्राथमिक शिक्षा मुजफ्फरनगर में हो गई। यही पर उन्होंने **1958** में बी.ए. की उपाधि प्राप्त की। उनके परिवार की आर्थिक स्थिति बिघड़ने पर उनके पिता जी ने उन्हें आगे पढ़ने के लिए मना किया इसके बारे में गिरिराज किशोर कहते हैं - "जमींदारी समाप्त हो जाने के बाद घर में संकट आ गया था। उस समय पिता ने आगे पढ़ने के लिए मना कर दिया था। लेकिन मेरे मामा आचार्य जुगलकिशोर और मेरी बुवाजाद बहन सत्या गुप्ता ने मुझे उत्साहित किया। वह दौर सभी के लिए कठिनाई का था।"[2] उन्होंने **1966** में 'समाज विज्ञान' विषय लेकर 'इन्स्टीटयुट ऑफ साईसेज आगरा' से एम.एस.डब्लू. किया। उनकी आर्थिक स्थिति पहचान कर सत्या गुप्ता ने उन्हें सहयोग दिया इसके बारे में किशोर जी लिखते है - "दो साल

---

1. गिरिराज किशोर - क्या यह मेरा समय था? - पृष्ठ - 12
2. डॉ.सुरेश सदावर्ते - कथाकार गिरिराज किशोर - पृष्ठ - 19

आगरा रहा। पढ़ाई के दौरान मैंने अपने पिता पर कम-से-कम भार डाला। जो वे भेज देते थे सिर आँखों पर। सत्या जीजी और सुभद्रा बहन जरूर अपनी-अपनी तरह मदद करती थी। सत्या जीजी का वरदहस्त बाद में भी रहा।"[1] इससे स्पष्ट होता है कि किशोर जी को जमींदार होते हुए भी पढ़ाई के दौरान आर्थिक समस्या से गुजरना पड़ा है।

1.1.5 नौकरी :

गिरिराज किशोर जी 1960 से लेकर 1964 तक उत्तर प्रदेश में 'सेवायोजन अधिकारी" एवं 'प्रोबेशन आफिसर' रहें। तथा दिसंबर 1976 से लेकर 1983 तक आय.आय.टी. कानपुर में 'कुलसचिव' के पद पर कार्यरत रहें। अपने आत्मसम्मानी स्वभाव के कारण उन्होंने कई बार नौकरी छोड़ दी। नौकरी करते वक्त उनपर आरोप करके उन्हें को निलंबित कर दिया गया था। इसके बारे में गिरिराज किशोर जी लिखते है -"वहाँ से रजिस्ट्रार के पद आई.आई.टी. आ गया। तानशाह निदेशक ने निलंबित कर दिया पर मैं मानता हूँ कि सच्चाई मेरे साथ खड़ी है। सच्चाई में ठोकरें भी पड़ती है और आदमी गिर-गिर कर उठने के अवसरों का धनी भी होता है।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि किशोर जी को अपने आत्मसम्मानी स्वभाव के कारण तकलीफों के साथ-साथ नौकरी भी खोनी पड़ी थी।

1.1.6 विवाह :

गिरिराज किशोर जी का विवाह 1967 में मीरा जी के साथ हुआ। गिरिराज जी के दाम्पत्य जीवन में हमेशा उनकी पत्नी श्रीमती मीरा ने सुख-दु:ख में साथ दिया है, इसके बारे में गिरिराज किशोर लिखते हैं - "मेरे घरवालों का सहयोग तो अद्‌वितीय है ही, खास तौर से मेरी पत्नी मीरा का। वे मेरी जबरदस्त क्रिटिक है। परंतु मेरे कामों में भरपूर सहयोग देती है।"[3] मीरा जी ने कठिन परिस्थिति का सामना कर

---

1. गिरिराज किशोर - क्या यह मेरा समय था? - पृष्ठ - 13
2. संपा.बलराम - अपने आस-पास पृष्ठ - 32
3. गिरिराज किशोर - पहला गिरिमिटियॉ - पृष्ठ - 16

पारिवारिक जीवन सफल किया है। किशोर जी को जया और शिवा नाम की दो लड़कियाँ और एक लड़का है जिसका नाम अनिश है।

1.2. रचना संसार :

गिरिराज किशोर जी ने बड़े लंबे समय तक साहित्य साधना की है और आज तक यह साधना जारी रखी है। साहित्य की सभी विधाओं में लेखन कर के उन्होंने साहित्य में अपना अलग स्थान निश्चित किया है। उन्होंने नाटक, कहानियाँ, उपन्यास, एकांकी, आलोचनात्मक साहित्य, बाल-साहित्य आदि से रचना संसार बढ़ाया है। गिरिराज किशोर जीवन में आदर्शवादी और लेखन में यथार्थवादी है। गिरिराज किशोर जी ने सन् 1960 से लेकर 1997 तक की रचना-यात्रा में 7 नाटक, एक एकांकी, 15 उपन्यास, 13 कहानी संग्रह, 3 बाल साहित्य की किताबें लिखकर हिंदी साहित्य में अपना स्थान निश्चित किया है। उनकी रचनाओं का कई विदेशी भाषा में अनुवाद हुआ है। गिरिराज किशोर लिखते है - "लेखन मेरे लिए मुख्य है और नौकरी दूसरे नंबर पर है। अभी मैं जिस स्थिति में गुजरा हूँ, मेरे लेखन ने ही मुझको सहारा दिया है। अगर दूसरी चीज महत्त्वपूर्ण होती या नौकरी मेरे लिए मुख्य होती तो लेखन छूट जाता। लेकिन लेखन मुख्य था इसीलिए नौकरी छूटने का भी कोई खतरा नहीं।"[1] समाज की स्थिति तथा समस्या को अंकन करना उनके साहित्य की विशेषताएँ रही है। गिरिराज किशोर की प्रकाशित रचनाएँ इस प्रकार हैं -

1. गिरिराज किशोर - क्या यह मेरा समय था? - पृष्ठ - 12

1.2.1 नाटक :

अ.क्र.	नाटक का नाम	प्रकाशन तथा प्रकाशन काल
1	नरमेध	नटरंग द्वारा, 1972
2	प्रजा ही रहने दो	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, से 1972
3	घास और घोड़ा	सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 1980
4	चेहरे-चेहरे किसके चेहरे	लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1983
5	केवल मेरा नाम लो	हिंदी साहित्य भवन, कानपुर प्रथम संस्करण - 1984
6	जुर्म-आयद	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 1987
7	काठ की तोप	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, 2001

1.2.2 उपन्यास :

अ.क्र.	उपन्यास का नाम	प्रकाशक तथा प्रकाशन काल
1	लोग	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1966
2	चिड़िया घर	सरस्वती विहार, शाहदरा, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1968
3	यात्राएँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1971

4	जुगलबंदी	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1973
5	दो	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1974
6	इन्द्र सुने	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978
7	दावेदार	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1978
8	तीसरी सत्ता	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1982
9	यथा प्रस्तावित	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1984
10	परिशिष्ट	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1984
11	असलाह	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम, संस्करण 1987
12	अंतर्ध्वस	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1990
13	ढाईघर	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
14	यातना घर	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथग संस्करण 1997
15	पहला गिरमिटिया	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1999

1.2.3 कहानी संग्रह :

अ. क्र.	कहानी संग्रह का नाम	प्रकाशक तथा प्रकाशन काल
1	नीम के फूल	किताब महल, जीरो रोड़, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1964
2	चार मोती बेआब	भारती भंडार, लद्दिर रोड़, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण 1964
3	पेपरवेट	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1967
4	रिश्ता और अन्य कहानियाँ	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1968
5	शहर-दर-शहर	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1976
6	हम प्यार कर ले	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली प्रथम संस्करण 1980
7	जगतारणी और अन्य कहानियाँ	संभावना प्रकाशन, मेरठ, प्रथम संस्करण 1981
8	गाना बड़े गुलाम अली खाँ का	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
9	वल्द रोजी	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1987
10	यह देह किसकी है	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1999
11	लहु पुकारेगा (संपादित)	सरस्वती प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1981

1.2.4 एकांकी :

अ.क्र.	एकांकी का नाम	प्रकाशन तथा प्रकाशन काल
1	गुलाम बेगम, बादशाह	राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1979

1.2.5 नाटक संग्रह :

अ क्र	नाटक संग्रह	प्रकाशक तथा प्रकाशन काल
1	रंगार्पण	आत्माराम एण्ड सन्स, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1980

1.2.6 आलोचना :

अ.क्र.	आलोचना का नाम	प्रकाशक तथा प्रकाशन काल
1	संवाद सेतु	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
2	लिखने का तर्क	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1991
3	कथ -अकथ	वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1986
4	सरोकार	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1992
5	एक जनभाषा की त्रासदी	राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 1993

1.2.7 बाल साहित्य :

1. बच्चों के निराला
2. सोने की गुड़ियाँ
3. पके सोने के पेड़

1.3 अनुदित रचनाएँ :

अ.क्र.	गिरिराज किशोर	अनुदित भाषा एवं विधा और अनुवादक	प्रकाशक तथा प्रकाशन काल
1	रिश्ता और अन्य कहानियाँ	कहानी रिलेशनशिप, अंग्रेजी अनुवादक : गॉर्डन सी रोडर मल	युनिव्हर्सिटी ऑफ कॅलिफोर्निया प्रेस बर्कले द्वारा
2	यात्रायें (उपन्यास)	हिंदी में विश्लेषनात्मक ग्रंथ अनुवादक: प्रो.थियो डेमे स्त्रेस्त	लीड़न विश्वविद्यालय नीदर लैंड्स
3	ढाई घर	पंजाबी में पंजाबी कवि डॉ.हरभजन सिंह	साहित्य अकादमी, 1994

1.4 साक्षात्कार :

"किशोर जी के 'लोग' उपन्यास पर प्रो लोठार लुन्से द्वरा विवेचनात्मक टिपण्णी और साक्षात्कार हुआ है।"[1]

1.5 सम्मान एवं पुरस्कार :

गिरिराज किशोर जी ने अपनी प्रतिभा से हिंदी साहित्य में एक महत्त्वपूर्ण स्थान निश्चित किया है। उन्हें निम्नलिखित सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त हैं -

1. शोधछात्र राजेंद्र पांडूरंग पवार - गिरिराज किशोर का नाटयशिल्प' इस लघुशोध प्रबंध से उधृत...पृष्ठ. 16

1. "मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य परिषद द्वारा 'वीरसिंह देव अखिल भारतीय सम्मान' परिशिष्ट उपन्यास पर।"[1]
2. "उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'भारतेंदु पुरस्कार' 'चेहरे चेहरे किसके चेहरे नाटक पर।"[2]
3. "उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा 'साहित्य भूषण' सम्मान।"[3]
4. "उत्तर प्रदेश हिंदी सम्मेलन द्वारा 'वासुदेव सिंह स्वर्ण पदक'।"[4]
5. "सन् 1998 99 में भारतीय संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा एमेरिटस प्रोफेसर के रूप में सम्मानित।"[5]
6. "भारतीय भाषा परिषद द्वारा हिंदी लेखन के लिए सन 1999-2000 का राष्ट्रीय शतदल से सम्मानित।"[6]
7. "'ढाई घर' उपन्यास के लिए सन् 1992 का साहित्य अकादमी पुरस्कार।"[7]
8. "कैंब्रिज इंग्लैंड द्वारा इंटरनेशनल ऑथर ऑफ मेरिट गोल्ड मेड़ल।"[8]
9. "उत्तर प्रदेश हिंदी सम्मेलन द्वारा भगवती प्रसाद वाजपेयी शताब्दी सम्मान प्राप्त।"[9]

---

1. शोधछात्र राजेंद्र पांडूरंग पवार	-	गिरिराज किशोर का नाटयशिल्प' इस लघुशोध प्रबंध से उधृत...पृष्ठ. 16
2. वही	-	पृष्ठ. 16
3. वही	-	पृ. 16
4. वही	-	पृ. 16
5. वही	-	पृ. 16
6. वही	-	पृ. 16
7. वही	-	पृ. 16
8. वही	-	पृ. 16
9. वही	-	पृ. 16

1.6 विशेष सहयोग एवं सदस्य :

अ.क्र.	संस्था	सहयोग	पद
1	नेशनल बुक ट्रष्ट	राष्ट्रीय लेखक शिबीर	हिंदी प्रतिनिधी
2	एन.बी.टी.दिल्ली	सलाहकार समिति	सदस्य
3	वत्सल निधी द्वारा आयोजित लखनऊ वृंदावन एवं जबलपुर	लेखकीय शिबीर	सदस्य

1.2.13 विदेश यात्राएँ :

गिरिराज किशोर जी ने अनेक विदेश यात्राएँ की हैं। प्रस्तुत यात्राएँ निम्नलिखित हैं ...

1. "सन 1966 में 14 वी युरोपीयन साऊथ एशिया कान्फेंस के पन हेगन में किशोर जी ने अपना शोध पत्र प्रस्तुत किया।"[1]
2. "सन् 1995 में गांधीजी पर शोध कार्य करने हेतु डरबन, जोहन्सबर्ग, मॉरिशयस और प्रिटोरिया की यात्राएँ की।"[2]
3. "सन् 1996 में पाँचवे विश्व हिंदी सम्मेलन में भारतीय सांस्कृतिक मंडल के सदस्य के रूप में त्रिनिदाद की यात्रा की।"[3]
4. "अक्तूबर, 2005 में भारतीय लेखक शिष्ट मंडल के सदस्य के रूप में बीजींग चीन और शांघाय की यात्रा की।"[4]
5. "फरवरी, 2005 में भारतीय लेखक शिष्ट मंडल के साथ पाकिस्तान के लाहौर और इस्लामाबाद की यात्रा की।"[5]

---

1. शोधछात्र राजेंद्र पांडूरंग पवार - गिरिराज किशोर का नाटयशिल्प' इस लघुशोध प्रबंध से उधृत...पृष्ठ. 17
2. वही - पृष्ठ. 17
3. वही - पृ. 17
4. वही - पृ. 17
5. वही - पृ. 17

निष्कर्ष :

गिरिराज किशोर ने विविध विधा में लेखन कार्य किया है। उन्होंने उपन्यास कहानी, नाटक विधा में अपना स्थान निर्माण किया है। नौवी कक्षा से ही उनका साहित्यिक लेखन है। बचपन में माता की छत्र-छाया उन्हें नहीं मिली। उनके परिवार के वे छठी संतान होने के कारण उनका लाड़-प्यार हुआ है। उनके वैवाहिक जीवन में उनकी पत्नी मीरा जी ने उन्हें अनेक समस्याओं में साथ दिया है। उनके नौकरी में हर बार समस्याएँ आती रही लेकिन उन्होने अपना साहित्य-लेखन कार्य कभी नही रोका। अपना लेखन उन्होंने निरंतर जारी रखा। गिरिराज किशोर जी का बार-बार नौकरी छुटना और बार-बार नौकरी पाना उनके आत्म सम्मानी और स्वाभिमानी स्वभाव का परिचय देता है। अपने जीवन में किशोर जी ने आर्थिक समस्या का सामना किया है तथा अपने आत्मसम्मानी स्वभाव के कारण उन्हें कई बार नौकरी छोड़नी पड़ी है।

संक्षेप में गिरिराज किशोर जी जीवन में आदर्शवादी और लेखन में यथार्थ वादी है। उन्होंने अपने हर विधा में अपने समाज में जो स्थित आम व्यक्ति को पीड़ित करनेवाली समस्याओं को चित्रित किया है।